बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा : एक अनुशीलन

डॉ. सुमित गंगवार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
Email: sumitgangwarhnbgu@gmail.com

सारांश

यह सर्वविदित है कि भगवान बुद्ध ने न भाव (Being) का, न आभाव (Nonbeing) का, बल्कि परिवर्तन (Becoming) का उपदेश दिया।बुद्ध का दर्शन मध्यम मार्ग का दर्शन है।बुद्ध ने विषय भोग और तपस्या दोनों कोटियों का खंडन किया और सम्यक् दृष्टि, सम्यक् वचन और सम्यक् आचार का मध्यम मार्ग अपनाया।बौद्ध दर्शन लोकोपकार के लिए निर्वाण की प्राप्ति हेतु चार आर्य सत्यों एवं त्रिरत्न अर्थात् शील (सात्विक कर्म), समाधि (चित्त की नैसर्गिक एकाग्रता) तथा प्रज्ञा (ज्ञान) से युक्त अष्टांगिक मार्ग के पालन का उपदेश देता है।समय परिवर्तन के साथ-साथ बौद्ध धर्म विभिन्न शाखाओं में विभक्त हो गया। इसमें से चार शाखाओं यथा (1) माध्यमिक शून्यवाद, (2) योगाचार विज्ञानवाद, (3) सौत्रान्तिक बाह्यानुमेयवादतथा (4) वैभाषिक बाह्य प्रत्यक्षवाद प्रमुख हैं। बौद्ध धर्म की इन चारों शाखाओं के दर्शन में ज्ञान को अत्यधिक महत्व दिया गया है।प्रस्तुत शोध आलेख में बौद्ध धर्म तथा दर्शन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए इसकी चारों प्रमुख शाखाओं की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के वास्तविक अर्थ, ज्ञान की प्रकृति, ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान के वर्गीकरण तथा ज्ञान की प्राप्ति के प्रमाणों पर विस्तृत चर्चा की गई है।

प्रमुख शब्दावली-बौद्ध दर्शन, ज्ञानमीमांसा, सम्यक् ज्ञान, प्रत्यक्ष, अनुमान।

प्रस्तावना

महात्मा बुद्ध को बौद्ध दर्शन का प्रणेता माना जाता है । महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व बैशाख पूर्णिमा के दिन कपिलवस्तु नामक स्थान के राजवंश में हुआ था (आम्बेडकर, 1997 अनुवादक, कौसल्यायन)। बुद्ध को यह चिंता निरंतर सताती रहती थी कि संसार के दुःखों को किस प्रकार दूर किया जाए। दुःखका समाधान ढूंढने के लिए एक दिन वे राजमहल को छोड़कर संन्यास के मार्ग की ओर चल पड़े। बिहार के बोध गया नामक स्थान पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे उनको तत्वज्ञान की प्राप्ति हुई। तत्वज्ञान अर्थात् बोधि (Enlightenment) प्राप्त कर लेने के बाद वे बुद्ध (Enlightened) की संज्ञा से विभूषित किए गए। इस नाम के अतिरिक्त उन्हें तथागत (जो वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को जानता है) तथा अर्हत्ता (The Worthy) की संज्ञा दी गई (सिन्हा, 2023)।

©Indira Gandhi National Open University

बुद्ध ने स्वयं कोई पुस्तक नहीं लिखी। उनके उपदेश मौखिक ही होते थे। बुद्ध ने 483 ईसा पूर्व में अपना शरीर त्याग दिया। इसके पश्चात महात्मा बुद्ध के शिष्यों ने उनके उपदेशों का संग्रह *'त्रिपिटक'* में किया। त्रिपिटक की रचना पालि साहित्य में की गई है। *'त्रि'* का अर्थ तीन तथा *'पिटक'* का अर्थ *'पिटारी'* होता है। इसीलिए त्रिपिटक का शाब्दिक अर्थ होता है तीन पिटारियाँ (हिरियन्ना, 2000)। सुत्तपिटक, अभिधम्म पिटक और विनय पिटक इन तीन पिटकों के नाम हैं। सुत्तपिटक में धर्म संबंधी बातों की चर्चा की गई है। अभिधम्म पिटक में बुद्ध के दार्शनिक विचारों का संकलन है। इसमें बुद्ध के मनोवैज्ञानिक संबंधी विचार भी संग्रहित हैं। विनय पिटक में नीति संबंधी बातों की व्याख्या की गई है। त्रिपिटक की रचना का समय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व माना गया है। बुद्ध की मुख्य शिक्षाएं चार आर्य सत्य हैं (सिन्हा, 2023)।

बुद्ध का सम्पूर्ण उपदेश चार आर्य सत्यों यथा (1) संसार दुःखों से परिपूर्ण है (दुःख), (2) दुःखों का कारण भी है (दुःख-समुदाय, (3) दुःखों का अंत संभव है (दुःख निरोध); तथा (4) दुःखों के अंत का मार्ग है(दुःख निरोध-मार्ग) के अंतर्गत आता है(ओड़, 2013 तथा पाठक, 2017)।

चौथा आर्य सत्य दुःख निरोध का मार्ग अर्थात् उपाय है। यह उपाय निम्नलिखित आठ अंगों का मार्ग है- (1) सम्यक् दृष्टि, (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक् वाक्, (4) सम्यक् कर्म, (5) सम्यक् आजीविका, (6) सम्यक् व्यायाम, (7) सम्यक् स्मृति; तथा (8) सम्यक् समाधि। जिन्हें समेकित रूप से अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है (देवराज, 2002 तथा ओड़, 2013)।

बौद्ध दर्शन का इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि यद्यपि तथागत बुद्ध ने दर्शन की व्यर्थता को प्रमाणित करने का प्रयास किया किन्तु फिर भी उनके द्वारा प्रतिपादित बौद्ध दर्शन वाद-विवाद के विषय से अछूता नहीं रहा । जब बौद्ध धर्म का प्रचार भारत देश से निकलकर विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में हुआ तो इसको समालोचना का विषय भी बनना पड़ा। जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म में अनेक दार्शनिक सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ। बौद्ध धर्म में क्रमशः तीस से अधिक शाखाएँ विकसित हुईं(सिन्हा, 2016)। जिनमें से चार शाखाओं यथा (1) माध्यमिक शून्यवाद, (2) योगाचार विज्ञानवाद, (3) सौत्रान्तिक बाह्यानुमेयवाद,तथा (4) वैभाषिक बाह्य प्रत्यक्षवाद को भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है (शास्त्री, 1953 तथा हिरियन्ना, 2000)।

माध्यमिक शून्यवाद बौद्ध दर्शन के चार प्रमुख शाखाओं में से एक शाखा है। जिसके प्रवर्तक बौद्ध नागार्जुन को माना जाता है। नागार्जुन की *'माध्यमिक कारिका'* इस मत का आधार ग्रंथ है (दत्ता तथा चटर्जी, 2012)। माध्यमिक शून्यवाद में शून्य का अर्थ शून्यता नहीं अपितु वर्णनातीत है। नागार्जुन के अनुसार परमतत्व को वर्णित नहीं किया जा सकता।माध्यमिक शून्यवाद को सापेक्षवाद के नाम से भी जाना जाता है।सापेक्षवाद के अनुसार समस्त वस्तुओं का स्वभाव अन्य वस्तुओं पर निर्भर करता है।शून्यवाद वस्तुओं को न ही सर्वथा निरपेक्ष तथा आत्मनिर्भर मानता

©Indira Gandhi National Open University

है और न ही पूरा असत्य मानता है । शून्यवाद सत्य और असत्य जैसे एकल मतों की अपेक्षा वस्तुओं के परस्पर निर्भर अस्तित्व को मानता है (सिन्हा, 2023)।

योगाचार विज्ञानवाद के प्रवर्तक असंग और वसुबन्धु थे।*'लंकावतार सूत्र'*नामक ग्रंथ को विज्ञानवाद का प्रमाणिक ग्रंथ माना जाता है। विज्ञानवाद के अनुसार मात्र विज्ञान (Consciousness) ही एकमात्र सत्य है।विज्ञान के अतिरिक्त सभी विषय असत्य हैं।विज्ञानवादी बाहरी वस्तुओं की सत्ता का तो खंडन करते हैं परन्तु चित्त की सत्ता में विश्वास करते हैं । इनका मानना है कि यदि विज्ञान अर्थात् मन की सत्ता को नहीं माना जाए तो ऐसी स्थिति में सभी विचार असिद्ध हो जाते हैं।(राजू, 2008)।

सौत्रान्तिक बाह्यानुमेयवाद हीनयान सम्प्रदाय का एक रूप है।*'सूत्र पिटक'* पर आधारित होने के कारण इस शाखा को सौत्रान्तिकनाम से जाना जाता है। कुमार लाट इस मत के समर्थक हैं। सौत्रान्तिक चित्त तथा बाह्य वस्तुओं, दोनों को सत्य मानते हैं। सौत्रान्तिक बाह्य जगत को चित्त के समान सत्य मानते हैं। सौत्रान्तिकों के अनुसार ज्ञान के दो प्रमाण यथा प्रत्यय और अनुमान होते हैं (सुज़ुकी, 2000)।

वैभाषिक बाह्य प्रत्यक्षवाद मत मूलतः विभाषा पर आधारित है, इसलिए इसका नाम वैभाषिक पड़ा। विभाषा (अभिधर्म पर विभाषा नाम टीका लिखने के कारण) में विश्वास रखने के कारण इस सम्प्रदाय को वैभाषिक कहा जाता है। वैभाषिक चित्त तथा जड़ दोनों की सता को स्वीकार करते हैं। ये सभी वस्तुओं के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, इसलिए इन्हें सर्वास्तित्ववादी भी कहा जाता है। वैभाषिक बाहरी विषयों को प्रत्यक्ष का विषय मानते हैं, इसके अतिरिक्त ये अनुमान को भी एक प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं (उपाध्याय, 1954)।

भारतीय दर्शन परंपरा में ज्ञानमीमांसा के उद्भव और विकास का इतिहास भारतीय दार्शनिक परंपरा के इतिहास जितना ही पुराना है। भारतीय ज्ञानमीमांसा के इतिहास को पांच खण्डों यथा (1) वैदिक ज्ञानमीमांसा (तत्वमीमांसीय ज्ञानमीमांसा), (2) सूत्र ग्रंथों में उपलब्ध ज्ञानमीमांसा (मनोवैज्ञानिक ज्ञानमीमांसा), (3) सम्प्रदाय काल की ज्ञानमीमांसा (प्रणालीबद्ध ज्ञानमीमांसा), (4) नव्य-विकास काल (तर्कनिष्ठ ज्ञानमीमांसा), तथा (5) अर्वाचीन काल में विभक्त किया जा सकता है (सिन्हा, 2016)।

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा

बौद्ध परंपरा के पालि ग्रंथों में ज्ञानमीमांसा और तर्कशास्त्र संबंधी आरंभिक विचार परिलक्षित होते हैं। भारतीय दर्शन की बौद्ध परंपरा यद्यपि अनुभववादी, लोकवादी और बोधगम्यता पर आधारित थी तथापि इस परंपरा में ज्ञानमीमांसा का उद्भव ब्राह्मण परंपरा के विरोधाभास के कारण ही हुआ।

©Indira Gandhi National Open University

बौद्ध ज्ञानमीमांसा प्रणालीबद्ध और वैज्ञानिक रूप में पहली बार आचार्य दिग्नाग के ग्रंथों में दिखाई देती है । बौद्ध ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में दिग्नाग का हस्तक्षेप एक महत्वपूर्ण घटना है। वर्तमान समय में हम जिस बौद्ध ज्ञानमीमांसा का अध्ययन करते हैं उसकी आधारभूमि के रूप में दिग्नाग का '*प्रमाणसमुच्चय*' तथा धर्मकीर्ति के '*प्रमाणवर्तिका*' और '*न्यायबिंदु*' जैसे ग्रंथ हैं।दिग्नाग ने प्रत्यक्ष और अनुमान नामक दो प्रमाणों को स्वीकार किया (हिरियन्ना, 2000)।धर्मकीर्ति ने ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में प्रमाण-व्यवस्था के सिद्धांत को प्रतिपादित किया।प्रमाण-व्यवस्था का सिद्धांत एक अद्वितीय सिद्धांत है जिसके अनुसार प्रत्येक प्रमाण का एक निर्धारित क्षेत्र है जिस क्षेत्र का अतिक्रमण वह प्रमाण नहीं कर सकता (सिन्हा, 2016)।

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान की प्रकृति

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान की प्रकृति और इसको प्राप्त करने के उपायों के सम्बन्ध में मतभेद है।हीनयान मत के दोनों सम्प्रदायों अर्थात् वैभाषिक (बाह्य प्रत्यक्षवाद)और सौत्रान्तिक (बाह्यानुमेयवाद) बाह्य जगत की सत्ता को स्वीकारते हैं। वैभाषिक बाह्य जगत की सत्ता को चित्त निरपेक्ष और सौत्रान्तिक इसे चित्त सापेक्ष मानते हैं । ये पदार्थों के धर्मों एवं चित्त की क्रियाओं के ज्ञान को वास्तविक ज्ञान मानते हैं (लाल, 2014)। बौद्ध धर्म के महायान मत के दोनों सम्प्रदायों अर्थात् योगाचार विज्ञानवाद और माध्यमिक शून्यवाद दोनों की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के स्वरूप की विस्तृत चर्चा की गई है। योगाचार एक विज्ञानवादी दर्शन है,जोकि मात्र विज्ञान की सत्ता को स्वीकार करता है और अन्य किसी की भी सत्ता को स्वीकार नहीं करता है (शर्मा, 2010)। योगाचार विज्ञानवाद के अनुसार ज्ञाता, ज्ञेय तथा ज्ञान में कोई मौलिक भेद नहीं होता है। माध्यमिक शून्यवाद विज्ञान को अंतिम सत्य नहीं मानता। इसके अनुसार हमारा समस्त व्यावहारिक अथवा जगत संबंधी ज्ञान मात्र आभासिक ज्ञान है। यह ज्ञान सत्य तो है लेकिन इसकी सत्ता मात्र व्यवहार जगत तक ही सीमित होती है। माध्यमिक शून्यवाद का मानना है कि परमार्थ रूप में शून्यता ही सत्य है। इसलिए ज्ञान न तो गुण है, न द्रव्य है, न क्रिया है, न सम्बन्ध है, वरन् यह शून्यता मात्र है (दासगुप्ता, 2023)।

पारमार्थिक रूप से शून्य स्वरूप होने पर भी बौद्ध ज्ञान की व्यावहारिक सत्ता को स्वीकार करते हैं। बौद्ध ज्ञानमीमांसा के अनुसार '*ज्ञान*' तात्विक नहीं अपितु '*व्यावहारिक*' अथवा '*दैनंदिन ज्ञान*' है। इस प्रकार बौद्ध ज्ञानमीमांसा के अनुसार ज्ञान, ज्ञाता की चेतना में उत्पन्न विषय का बोध है।

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान का वर्गीकरण

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसामें ज्ञान अर्थात् प्रत्यभिज्ञा को मुख्यतः दो वर्गों यथा (1) सम्यक् ज्ञान तथा (2) मिथ्या ज्ञान में विभक्त किया गया है(सिन्हा, 2016)।

©Indira Gandhi National Open University

1. **सम्यक् ज्ञान (प्रमा)**-बौद्ध मतानुसार वह ज्ञान जो सभी पुरुषार्थों की प्राप्ति का साधन है, सम्यक् ज्ञान कहलाता है (*सम्यग्ज्ञानपूर्विका सर्वपुरुषार्थसिद्धिरिति*)। सम्यक् ज्ञान ही ऐसा ज्ञान है जिसकी प्राप्ति के बाद ही अध्यवसाय अथवा निश्चय आता है और उसके बाद पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। संशय और विपयर्य सम्यक् ज्ञान के विरुद्धधर्मी हैं।
2. **मिथ्या ज्ञान (अप्रमा)**-बौद्ध मत के अनुसार वह ज्ञान जो भ्रमित कर देता है और चेतन प्राणियों के लिए उनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं का वंचक होता है, मिथ्या ज्ञान कहलाता है।

ज्ञान के इस वर्गीकरण को निम्नलिखित रेखाचित्र के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

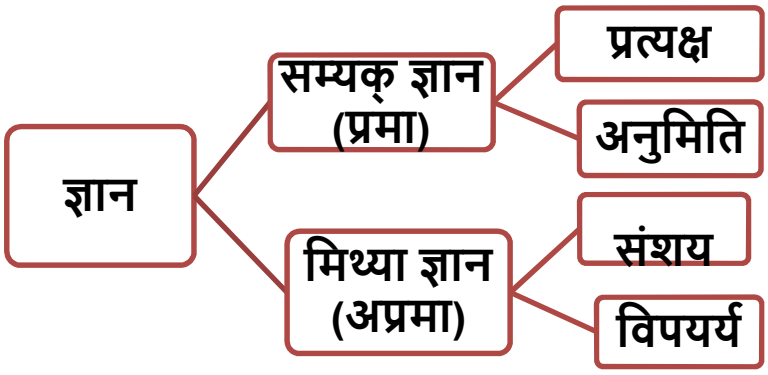

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के प्रमाण

पारंपरिक रूप में ज्ञाता-ज्ञेय के सम्बन्ध के परिणाम को ज्ञान माना गया है। जब ज्ञात का ज्ञेय पदार्थ के साथ इंद्रियों के माध्यम से (या कभी-कभी अतींद्रिय या अलौकिक रूप से भी) संपर्क होता है तो उससे ज्ञाता को ज्ञेय पदार्थ के संबंध में एक चेतना होती है कि वह है अर्थात् उसका अस्तित्व है तथा उसमें अमुक-अमुक गुण हैं। इसी प्रकार की चेतना को सामान्यतः ज्ञान की संज्ञा दी जाती है। किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता को हम जानते हैं ऐसा कहने के लिए तीन शर्तों की पूर्ति आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि ज्ञान की मुख्य तीन शर्ते हैं- (1) *'प्रतिज्ञप्ति'* सत्य हो, (2) ज्ञान प्राप्त करने वाले को यह विश्वास कि *'प्रतिज्ञप्ति'*सत्य है तथा (3) उसके पास इस बात के यथेष्ट प्रमाण या आधार हों कि *'प्रतिज्ञप्ति'* सत्य है (तिवारी, 2012)।

ज्ञान के प्रमाण के विषय में बौद्ध मतावलंबी एक विशेष नियम की स्थापना करते हैं जिसे *'प्रमाण व्यवस्था'* का नाम दिया गया है। बौद्ध मत के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के मात्र दो प्रमाण हैं- *'प्रत्यक्ष'* और *'अनुमान'*। बौद्ध दर्शन के अनुसार सत्य द्विविध अर्थात् परमार्थ तथा संवृत्ति है। सत्य को जानने के भी दो प्रमाण यथा (1) प्रत्यक्ष और,(2) अनुमान हैं। प्रत्यक्ष का विषय परमार्थ या संरक्षण है तथा अनुमान का विषय संवृत्ति है। प्रत्यक्ष और अनुमान की बीच का यह अंतर प्रत्यक्ष और अनुमान की विषय-वस्तु के आधार पर किया गया है। प्रत्यक्ष के द्वारा जिसका बोध

©Indira Gandhi National Open University

होता है, अनुमान के द्वारा उसका बोध संभव नहीं हो सकता। इसी प्रकार अनुमान के द्वारा जिसका बोध होता है प्रत्यक्ष के द्वारा उसका बोध संभव नहीं हो सकता(सिन्हा, 2016)।

वैभाषिकों के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के दो साधन यथा (1) ग्रहण तथा,(2) अध्यवसाय हैं।यहाँ ग्रहण का अर्थ इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष करना अर्थात् इसके द्वारा पदार्थ के सामान्य स्वरूप का ज्ञान से लिया जाता है।पदार्थ को नाम एवं जाति आदि कल्पना से संयुक्त करना अध्यवसाय कहलाता है। सौत्रान्तिक इन्द्रिय प्रत्यक्ष के आधार पर चित्त द्वारा अनुमान करने की क्रिया पर बल देते हैं। योगाचार विज्ञानवादी और माध्यमिक शून्यवादी शून्य के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और उसको प्राप्त करने के लिए योग की क्रियाओं पर बल देते हैं (लाल, 2014)।

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में दो प्रमाणों का उल्लेख किया जाता है (1) प्रत्यक्ष, तथा (2) अनुमान।

1. प्रत्यक्ष

विश्व की समस्त ज्ञानमीमांसीय विवेचनाओं में प्रमाण के रूप में प्रत्यक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्यक्ष के खंडन अथवा मंडन के बिना कोई भी ज्ञानमीमांसीय विवेचन संभव नहीं।

प्रत्यक्ष क्या है? अथवा प्रत्यक्ष के संप्रत्यय के विषयके सम्बन्ध में भारतीय दार्शनिक एकमत नहीं हैं। प्रत्यक्ष शब्द दो से मिलकर बना है प्रति+अक्ष। जहाँ *'प्रति'* का अर्थ *'समक्ष'* और *'अक्ष'* का अर्थ *'चक्षु'* अर्थात् *'आँख'*है। लेकिन यह प्रत्यक्ष के अर्थ का संकुचित दृष्टिकोण है। व्यापक दृष्टिकोण में प्रत्यक्ष का अर्थ उस ज्ञान से है जिसकी प्राप्ति इंद्रियों के माध्यम से होती है। इस प्रकार शाब्दिक विवेचना की दृष्टिकोण से प्रत्यक्ष इंद्रियजन्य ज्ञान है।

प्रत्यक्ष के विषय में बौद्ध संप्रदाय में प्रमुख दो मत देखने को मिलते हैं इनमें से प्रथम मत योगाचार विज्ञानवादियों का तथा दूसरा मत शून्यवादी बौद्धों का है (सिन्हा, 2016)।

- **योगाचार विज्ञानवादियों का मत-** विज्ञानवादी वसुबंधु ने प्रत्यक्ष को परिभाषित करते हुए *'ततार्थद् विज्ञानम्'* कहा है। वसुबंधु के अनुसार प्रत्यक्ष वह ज्ञान है जो उस वस्तु के द्वारा उत्पन्न किया जाता है जिस वस्तु के संदर्भ में इस ज्ञान को *'प्रत्यक्ष ज्ञान'* की संज्ञा दी जा रही है। वसुबंधु प्रत्यक्ष को *'विज्ञान के द्वारा उत्पन्न ज्ञान'*की संज्ञा देते हैं।
- **शून्यवादी मत-** बौद्ध न्याय के प्रणेता आचार्य दिगनाग प्रत्यक्ष का अर्थ को स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि प्रत्यक्ष कल्पनारहित होता है। जिसमें वस्तु के नाम, जाति इत्यादि का कोई स्थान तथा महत्व नहीं होता। बौद्ध मत के अनुसार प्रत्यक्ष और अनुमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भेद भी यही है कि प्रत्यक्ष कल्पनारहित जबकि अनुमान कल्पनायुक्त होता है।

बौद्ध ज्ञानमीमांसा में प्रत्यक्ष के प्रकार

बौद्ध ज्ञानमीमांसा के अनुसार प्रत्यक्ष चार (i) इन्द्रिय ज्ञान, (ii) मनोविज्ञान, (iii) आत्मसंवेदन, तथा (iv) योगिज्ञान प्रकार के होते हैं(धर्मकीर्ति)।

©Indira Gandhi National Open University

i. **इन्द्रिय ज्ञान-** बाह्य जगत का समस्त ज्ञान जो इंद्रियों के माध्यम से चेतना में आता है, इन्द्रिय ज्ञान कहलाता है।

ii. **मनोविज्ञान-** अपने विषय के पश्चात, विषय के सहकारी, समांतर प्रत्यय रूप इन्द्रिय ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को मनोविज्ञान कहते हैं।

iii. **आत्मसंवेदन-** विषय की प्रति दुःख-सुख, रागादि, इच्छा का जो अनुभव होता है वह स्वसंवेदन अथवा आत्मसंवेदन कहलाता है।

iv. **योगिज्ञान-** समाधि अथवा चित्त की समग्रता से उत्पन्न होने वाले प्रत्यक्ष को योगिज्ञान कहते हैं। यह ज्ञान अज्ञात ज्ञापक (पूर्वकाल में न जानी हुई वस्तु को बतलाने वाला) होने के साथ-साथ अविसंवादी भी होता है।

2. अनुमान

अनुमान शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों *'अनु'* तथा *'मान'* के संयोग से हुई है।जिसमें *'अनु'* का अर्थ *'पश्चात'* या *'परवर्ती'* और *'मान'* का अर्थ *'ज्ञान'* होता है। इस प्रकार अनुमान एक प्रकार का *'परवर्ती ज्ञान'* है। भारतीय दर्शन में अनुमान का अर्थ *'व्याप्ति पर आधारित ज्ञान'* से लिया जाता है। व्याप्ति वह वाक्य है जहाँ अनुमान के वृहद्पद और मध्यपद के बीच सामान्य संबंध स्थापित किया जाता है।

अधिकांश विद्वान अनुमान प्रमाण के वैज्ञानिक विवेचना का श्रेय न्याय दर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम को देते हैं। जिन्होंने *'न्यायसूत्र'* में प्रमाण के रूप में अनुमान की वैज्ञानिक विवेचना की है। बौद्ध परंपरा में दीघनिकाय के ब्रह्मजालसुत्त, मज्झिमनिकाय के अनुमानसुत्त, खुद्दकनिकाय के उदानसुत्त, विनय पिटक के परिवारसुत्त, अभिधम्मपिटक के कथावत्थुपकरण, मिलिंदपहो के विविध संवादों में अनुमान प्रमाण के सूत्र में दिखाई देते हैं। कालांतर में इन सूत्रों को बौद्ध नागार्जुन ने अपने ग्रंथ *'उपायहृदय'* में व्यस्थित रूप से संकलित किया। बौद्ध न्याय के उद्भट विद्वान दिग्नाग के अनुसार ज्ञात अविनाभाव सम्बन्ध द्वारा नान्तरीयक (एक वस्तु का दूसरी वस्तु के आभाव में कभी न हो पाना) अर्थ का दर्शन ही अनुमान है (सिन्हा, 2016)।

बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में अनुमान के प्रकार

बौद्ध आचार्य दिग्नाग के अनुसार अनुमान दो यथा (i) स्वार्थानुमान तथा (ii) परार्थानुमान प्रकार के होते हैं (मिश्र, 1958)।

i. **स्वार्थानुमान-** मिश्र (1958) ने अपने *'तर्क संग्रह'* में कहा है कि स्वार्थानुमान वह अनुमान है जो अनुमानकर्ता स्वयं अपने संशय की निवृत्ति के लिए करता है (*स्वार्थं स्वप्रतिपत्ति हेतुः*)।जब अनुमान का उद्देश्य स्वार्थ (स्व+अर्थ) मूलक होता है तो इसे स्वार्थानुमान कहते हैं (सिन्हा, 2016)।स्वार्थानुमान एक आन्तरिक प्रक्रिया है जो ज्ञाता के मन में स्वयं के विषय बोध के लिए संपन्न होती है (धर्मोत्तराचार्य की न्याय बिंदुटीका, संपादक पीटरसन, 1929)।

©Indira Gandhi National Open University

ii. **परार्थानुमान-** परार्थानुमान, स्वार्थानुमान के उपरांत ही किया जाता है। परार्थानुमान वह अनुमान है जो दूसरों की शंका समाधान के लिए किया जाता है(*परसंशयनिवृत्तिप्रयोजनकमनुमानं परार्थानुमानम्*(मिश्र,1958)। पहले स्वार्थानुमान के द्वारा ज्ञान का अर्जन किया जाता है उसके पश्चात परार्थानुमान का उपयोग किया जाता है।चूँकि परार्थानुमान से प्राप्त ज्ञान द्वारा दूसरों को विषय का बोध कराया जाता है इसलिए यह शब्दबद्ध होता है। इस बोध के लिए अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है जोकि शब्द के अभाव से संभव नहीं, इसलिए परार्थानुमान शब्दमूलक होता है (सिन्हा, 2016)।

उपसंहार

बौद्ध दर्शन भारतीय दर्शन की वह परंपरा है जोकि इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को परिणामशील मानती है। यह आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती और यह प्रतिपादित करती है कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य निर्वाण की प्राप्ति है, जिसे चार आर्य सत्यों के ज्ञान एवं अष्टांगिक मार्ग तथा त्रिरत्न के पालन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है (लाल, 2014)। बौद्ध दर्शन क्षणिकवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनित्यवाद, अनात्मवाद तथा पर विश्वास करता है।यह अनीश्वरवादी दर्शन है (पाण्डेय, 2016)। प्रस्तुत शोध आलेख में बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बौद्ध दर्शन की ज्ञानमीमांसा में ज्ञान के मुख्यतः दो स्वरूपों यथा (1) सम्यक् ज्ञान तथा (2) मिथ्या ज्ञान का उल्लेख किया गया है,साथ ही ज्ञान के प्रमाण के विषय में बौद्ध दर्शन में *'प्रमाण व्यवस्था'* नामक नियम की चर्चा की गई है। बौद्ध ज्ञानमीमांसा के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के मात्र दो प्रमाण यथा *'प्रत्यक्ष'* और *'अनुमान'* हैं।

सन्दर्भ सूची

1. आम्बेडकर, बी. आर. (1997). *भगवान बुद्ध और उनका धर्म (अनुवादक डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन)*. नागपुर. बुद्धभूमि प्रकाशन.
2. चटर्जी, एस. तथा दत्ता, डी. (2012). *एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन फिलोसोफी.* नई दिल्ली. रूपा पब्लीकेशन्स इंडिया.
3. दासगुप्ता, एस. (2024). *ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलोसोफी (वॉल्यूम I).* न्यू दिल्ली. फिंगरप्रिंट पब्लिशिंग.
4. देवराज, एन. के. (2002). *भारतीय दर्शन ऐतिहासिक और समीक्षात्मक विवेचन.* लखनऊ. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान.
5. धर्मकीर्ति, *न्यायबिंदु.* दिनांक 08 सितम्बर, 2024 को https://ia802206.us.archive.org/34/items/in.ernet.dli.2015.313747/2015.313747.Nyayabindu.pdf से प्राप्त किया गया।

©Indira Gandhi National Open University

6. हिरियन्ना, एम.(2000). *आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलोसोफी.* न्यू दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस.
7. लाल, आर. बी. (2014). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत.* मेरठ. रस्तोगी पब्लिकेशन.
8. मिश्र, के. (1958). *तर्क भाषा.* बनारस. जयकृष्णदास हरिदास गुप्ता, चौखम्बा संस्कृत सीरिज. दिनांक 09 सितम्बर, 2023 को https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.321420/page/n3/mode/2up से प्राप्त किया गया।
9. ओड़, एल. के. (2013). *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि (पन्द्रहवां संस्करण).* जयपुर. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.
10. पाण्डेय, आर. के. (2016). *धर्म-दर्शन.* पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्रा. लि.
11. पाठक, आर. (2017). *भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा.* इलाहाबाद. अभिमन्यु प्रकाशन.
12. पीटरसन, पी.(1929). *धर्मोत्तराचार्य की न्याय बिंदुटीका.* दिनांक 01 सितम्बर, 2024को https://archive.org/details/TheNyayaBinduTikaOfDharmottaraAcharyaWithTheNyayaBinduPeterPeterson/mode/2up से प्राप्त किया गया।
13. राजू, पी. टी. (2008). *आइडियलिस्टिक थॉट्स ऑफ इंडिया.* लन्दन. जॉर्ज एलन एंड उन्विन लिमिटेड.
14. सिन्हा, एच. पी. (2023). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा.* नई दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस.
15. सिन्हा, जे. (2018). *भारतीय दर्शन.* दिल्ली. नई दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास प्राइवेट लिमिटेड.
16. सिन्हा, एन. (2016). *भारतीय ज्ञानमीमांसा.* नई दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास.
17. शर्मा, सी. (2010). *भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन.* नई दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास.
18. शास्त्री, डी. (1953). *भारतीय दर्शन-शास्त्र न्याय-वैशेषिक (भारतीय दर्शनशास्त्र का सामान्य परिचय, न्याय-वैशेषिक शास्त्र की रूपरेखा तथा सिद्धांतों का आलोचनात्मक विवेचन).* बनारस. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स. दिनांक 01 सितम्बर, 2024 को https://archive.org/download/in.ernet.dli.2015.448280/2015.448280.Bhartiya-darshan-shastra-67.pdf से प्राप्त किया गया।
19. सुज़ुकी, डी. टी. (2000). *आउटलाइन्स ऑफ महायान बुद्धिज़्म.* दिल्ली. मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स.

©Indira Gandhi National Open University

20. तिवारी, के. एन. (2012). *तत्वमीमांसा तथा ज्ञानमीमांसा.*नई दिल्ली. मोतीलाल बनारसीदास.
21. उपाध्याय, बी. (1954). *बौद्ध दर्शन मीमांसा.* बनारस. चौखम्बा विद्या भवन. दिनांक 01 सितम्बर, 2024 को https://ia902903.us.archive.org/19/items/in.ernet.dli.2015.483256/2015.483256.Bouddha-Darshan-Mimansa.pdf से प्राप्त किया गया।

****

©Indira Gandhi National Open University